2022 Hindi Compulsory
[SOLVED]

(b) **वाक्यों के शुद्ध रूप:**

(i) पक्षी अंडे देता है।
शुद्ध रूप: पक्षी अंडे देते हैं।

(ii) ये लड़का गानेवाला है।
शुद्ध रूप: यह लड़का गानेवाला है।

(iii) मरते क्या नहीं करते।
शुद्ध रूप: मरता क्या नहीं करता।

(iv) घोड़ा लँगड़ाते हुए भागा।
शुद्ध रूप: घोड़ा लड़खड़ाते हुए भागा।

(v) जहाँ अभी जंगल है यहाँ कभी नदी थी।
शुद्ध रूप: जहाँ अभी जंगल है, वहाँ कभी नदी बहती थी।

(c) **पर्यायवाची शब्द :**

(i) अक्षर - लिपि, अविनाशी, ईश्वर
(ii) लहर - तरंग, उमंग, आनंद
(iii) दर्पण - शीशा, आईना, आरसी
(iv) आभूषण - अलंकार, गहना, जेवर
(v) बाल - केश, रोम, रोआँ

(d) **शब्द युग्म का अर्थ एवं भेद :**

(i) पास - निकट
पाश - बंधन
वाक्य प्रयोग: भौंरे का पुष्प के **पास** आना उसके **पाश** का कारण बना।

(ii) दिन - दिवस
दीन - गरीब
वाक्य प्रयोग: वह बेचारा **दीन, दिन** भर सहायता के लिए भटकता रहा, परंतु किसी ने भी उसकी मदद नहीं की।

(iii) प्रसाद - कृपा
प्रासाद - महल
वाक्य प्रयोग: किसी **प्रासाद** का वासी बनना ईश्वर के **प्रसाद** से ही संभव है।

(iv) पानी - जल
पाणि - हाथ
वाक्य प्रयोग: दाएं **पाणि** से **पानी** देना अच्छा माना जाता है।

(v) शंकर - शिव
संकर - मिश्रित नस्ल
वाक्य प्रयोग: भगवान **शंकर** की पूजा में **संकर** नस्ल की गाय का दूध चढ़ाना अच्छा नहीं माना जाता है।

यू.पी.एस.सी. सी.एस. 2022 (मुख्य परीक्षा)
हिन्दी अनिवार्य हल प्रश्न पत्र

(Held On Sep. 2022)

Time allowed : Three hours *Maximum Marks : 300*

प्रश्न-पत्र के लिए विशिष्ट अनुदेश:

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

- सभी प्रश्नों के उत्तर लिखना अनिवार्य है।
- प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने अंकित हैं।
- उत्तर हिन्दी में ही लिखे जाएँगे, यदि किसी प्रश्न-विशेष में अन्यथा निर्दिष्ट न हो।
- जिन प्रश्नों के संबंध में अधिकतम शब्द-संख्या निर्धारित है, वहाँ इसका अनुपालन किया जाना चाहिए। यदि किसी प्रश्न का उत्तर, निर्धारित शब्द-संख्या की तुलना में काफी लंबा या छोटा है तो अंकों की कटौती की जा सकती है।
- प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका का कोई भी पृष्ठ अथवा पृष्ठ का भाग, जो खाली छोड़ा गया हो, उसे स्पष्ट रूप से काट दिया जाना चाहिए।

Q1. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 600 शब्दों में निबंध लिखिए: (100)

(a) नवीकरणीय ऊर्जा: संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ
(b) संचार क्रान्ति का महत्त्व
(c) खेलों का बढ़ता व्यवसायीकरण
(d) खान-पान का स्वास्थ्य पर प्रभाव

Ans.

(a) **नवीकरणीय ऊर्जा: संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ**

नवीकरणीय ऊर्जा या अक्षय ऊर्जा में वे सारी ऊर्जा शामिल हैं जो प्रदूषणकारक नहीं हैं तथा जिनके स्रोत का क्षय नहीं होता, या जिनके स्रोत का पुनः भरण होता रहता है। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जलविद्युत ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा, बायोमास, जैव ईंधन आदि नवीकरणीय ऊर्जा के कुछ उदाहरण हैं।

भारत वर्तमान समय में नवीनीकरण ऊर्जा पर अपनी निर्भरता को अधिक-से-अधिक बढ़ाने की कोशिश कर रहा है। विभिन्न क्षेत्रों में भारत नवीनीकरण ऊर्जा को प्राप्त करने के लिए ज्यादा-से-ज्यादा सफल प्रयोग कर रहा है। भारत में नवीनीकरण ऊर्जा की अपार संभावनाएं हैं। नवीनीकरण ऊर्जा संसाधन, ऊर्जा के परंपरागत स्रोतों (जो कि दुनिया के काफी सीमित क्षेत्रों में मौजूद है) की अपेक्षा काफी विस्तृत भू-भाग में फैले हुए हैं और यह सभी देशों को काफी आसानी से उपलब्ध हो सकते हैं। यह न केवल पर्यावरण के अनुकूल है, बल्कि इनके साथ कई प्रकार के आर्थिक लाभ भी जुड़े हुए हैं।

स्वच्छ पृथ्वी के प्रति जिम्मेदारी को ध्यान में रखते हुए भारत ने संकल्प लिया है कि वर्ष 2030 तक बिजली उत्पादन की हमारी 40 फीसदी स्थापित क्षमता नवीकरणीय ऊर्जा के

स्रोतों पर आधारित होगी। साथ ही यह भी निर्धारित किया गया है कि वर्ष 2022 तक 175 गीगा वाट नवीनीकरण ऊर्जा क्षमता स्थापित की जाएगी। इसमें सौर ऊर्जा से 100 गीगा वाट, पवन ऊर्जा से 60 गीगा वाट, बायो पावर से 10 गीगा वॉट एवं छोटी-छोटी पनबिजली परियोजनाओं से 5 गीगा वाट की क्षमता प्राप्त करना शामिल है।

इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य को हासिल करने के साथ ही भारत विश्व के सबसे बड़े स्वच्छ ऊर्जा उत्पादकों की कतार में शामिल हो जाएगा। यहां तक कि भारत नवीनीकरण ऊर्जा को हासिल करने में कई विकसित देशों से भी आगे आगे निकल जाएगा। वर्ष 2018 में देश की कुल स्थापित क्षमता में तापीय ऊर्जा की 63%, नाभिकीय ऊर्जा की 2% एवं पनबिजली की 13% और नवीनीकरण ऊर्जा की 21% हिस्सेदारी थी जो वर्तमान समय में काफी तेजी से नवीनीकरण ऊर्जा को प्राप्त करने में आगे बढ़ रही है तथा विभिन्न प्रकार की योजनाएं सरकार द्वारा संचालित की जा रही हैं। कई राज्यों में बड़े-बड़े तैरते हुए सोलर प्लांट लगाए गए हैं। राजस्थान एवं गुजरात जैसे राज्यों में पवन ऊर्जा के बड़े-बड़े प्लांट विकसित किए गए हैं। जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय सौर मिशन की शुरुआत 11 जनवरी, 2010 को भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री द्वारा की गई थी। इस मिशन के तहत वर्ष 2022 तक 20000 मेगावाट ग्रिड से जुड़ी सौर ऊर्जा के उत्पादन का महत्वकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया गया था। इसके बाद वर्ष 2015 में भारत सरकार ने वर्ष 2022 तक भारत की सौर ऊर्जा क्षमता को 5 गुना तक बढ़ाने के लिए अपनी स्वीकृति दी जोकि बढ़ने के बाद 1 लाख मेगा वाट हो गई।

परंतु, जहां नवीनीकरण ऊर्जा की इतनी संभावनाएं दिखाई दे रही हैं, इसके साथ चुनौतियां भी सामने आ रही हैं।

जीवाश्म ईंधन की अपेक्षा नवीनीकरण संसाधनों से अधिक मात्रा में ऊर्जा उत्पन्न करना अभी भी एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। जीवाश्म ईंधन से आज भी बड़ी मात्रा में बिजली का उत्पादन हो रहा है, जो स्पष्ट रूप से यह दिखाता है कि नवीकरणीय ऊर्जा अभी भी उतनी सक्षम नहीं है कि वह पूरे देश की ऊर्जा की आवश्यकता की पूर्ति कर सके। नवीकरणीय ऊर्जा का उत्पादन पूर्ण रूप से मौसम और जलवायु पर निर्भर करता है तथा यदि मौसम ऊर्जा उत्पादन के अनुकूल नहीं होगा तो हम आवश्यकतानुसार ऊर्जा का उत्पादन नहीं कर पाएंगे। नवीकरणीय ऊर्जा तकनीकी अभी बाजार में काफी नहीं है, इसीलिए इसकी आवश्यक दक्षता की कमी है और सीमित तकनीकी उपलब्ध है। हालांकि आने वाले समय में इसकी क्षमता को और अधिक बढ़ाया जाएगा और अधिक-से-अधिक नवीनीकरण ऊर्जा पर लोगों की निर्भरता को बढ़ाया जाएगा।

(b) संचार क्रान्ति का महत्त्व

संचार का अर्थ होता है- सूचना, सन्देश, संवाद या खबर को एक जगह से दूसरे जगह तक पहुंचाना। आधुनिक युग में संचार के क्षेत्र में क्रांति-सी आ गई है। भारत की राजतंत्रीय व्यवस्था में राजा की ओर से मुनादी करवाई जाती थी और जनता को राजकीय आदेशों की जानकारी दी जाती थी। समाचारपत्र, रेडियो, टेलीविजन, कंप्यूटर, इंटरनेट एवं मोबाइल की दुनिया में मुनादी की बात सोचकर ही हँसी आती है। निस्संदेह संचार क्रांति मानव सभ्यता की सबसे बड़ी और महत्त्वपूर्ण क्रांति है।

सूचना या संचार-व्यवस्था में मुनादी के बाद डाक-व्यवस्था की महत्ता को अस्वीकृत नहीं किया जा सकता। इसके पश्चात्, सूचना के महत्त्वपूर्ण साधनों में समाचारपत्रों की गणना की जाती है। स्वतंत्रता की लड़ाई में समाचारपत्रों ने महत्पूर्ण भूमिका निभाई।

संचार क्रांति के महत्त्वपूर्ण रूप है- प्रिंट मीडिया एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया। प्रिंट मीडिया के अंतर्गत समाचारपत्र आते हैं तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अंतर्गत रेडियो, टेलीविजन, कंप्यूटर, पेजर, लैपटॉप, इंटरनेट, फैक्स, ई-मेल, ई-कॉमर्स, टेलीफोन एवं मोबाइल। दृश्य संचार माध्यम के क्षेत्र में टेलीविजन सबसे बड़ा स्थान रखता है। अब डायरेक्ट टू होम 'DTH' सेवा के द्वारा हम सभी दर्शक सीधे सैटेलाइट से जुड़ गए हैं। कंप्यूटर में प्राप्त इंटरनेट की सुविधा से हम एक छोटे-से माउस पर क्लिक करते ही पलभर में सारी दुनिया से जुड़ जाते हैं।

इंटरनेट की सुविधा से संपन्न मोबाइल फोन का अर्थ है, हमारी मुट्ठी में पूरी दुनिया का होना। इंटरनेट तो ऐसा जादूगर है जो पलक झपकते बहुत सारे कठिन कार्यों को बहुत ही आसान कर देता है। इंटरनेट आज मनोरंजन तथा ज्ञान का सर्वोत्तम साधन बन गया है। हर समस्या का समाधान आज इंटरनेट पर उपलब्ध है।

संचार क्रांति ने हमारा जीवन बहुत ही आसान कर दिया है, जीवन की हर समस्या का समाधान लगभग आज इंटरनेट के माध्यम से हो पाया है। हमें हर प्रकार की जानकारी देने के लिए इंटरनेट उपलब्ध है, चाहे वह राष्ट्रीय जानकारी हो या अंतर्राष्ट्रीय जानकारी। आज इंटरनेट पर देश-विदेश की जानकारी के साथ ही खेल, संगीत, शिक्षा, फिल्म, मौसम आदि से सम्बंधित हमारी जिज्ञासाओं का समाधान शीघ्र हो जाता है। रेल या हवाई यात्रा के लिए टिकट बुक करना हो या होटल बुक करने के लिए, दाखिले के लिए स्कूल-कॉलेज की जानकारी लेनी हो या किसी अस्पताल की जानकारी लेनी हो, बिजली का बिल चुकाना हो या जमीन का लगान देना हो- ये सारे कार्य इंटरनेट के माध्यम से बहुत ही कम समय में हो जाते हैं। इससे श्रम और समय की बचत होती है। इंटरनेट की सुविधा से हमारी बहुत सारी समस्याएँ समाप्त हो गई हैं।

परंतु, जिस प्रकार से संचार क्रांति ने मनुष्य के जीवन को सरल एवं आसान बना दिया है, इसी के साथ इसके काफी नुकसान भी साथ भुगतने पड़ रहे हैं। साइबर क्राइम जैसे अपराध दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। जिस प्रकार से वर्तमान समय में हर व्यक्ति के पास मोबाइल फोन है तो लोगों की खुद की जानकारी लीक हो जा रही है। ऑनलाइन ठगी दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

संचार क्रांति से लाभ बहुत हैं तो हानियाँ भी कम नहीं है। इंटरनेट का दुरूपयोग करनेवाले भी बहुत हैं। अश्लील तस्वीरें भेजना, वाइरस के माध्यम से दूसरों को हानि पहुँचाना तथा गंदे-गंदे ई-मेल भेजना अब आम हो गया है। आतंकवादी इंटरनेट का प्रयोग कर अपनी क्रूर इच्छा की पूर्ति करते हैं। इसके माध्यम से ठगी का बाजार खूब फल-फूल रहा है।

रेडियो और दूरदर्शन प्रमुख संचार माध्यम हैं। इन माध्यमों का उत्तरदायित्व बनता है कि जन एवं राष्ट्रहित में कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएँ। इन पर प्रसारित किए जानेवाले विज्ञापन संतुलित, मर्यादित और देशहित में होने चाहिए। समाचारपत्रों को भी निष्पक्ष होकर समाचारपत्र प्रकाशित करना चाहिए।

अतः जिस प्रकार से संचार क्रांति ने मनुष्य के जीवन को सरल एवं स्वभाव बनाया है, परंतु उसी के साथ इसके बढ़ते दुरूपयोग भी कम नहीं है। अगर थोड़ी-सी भी

लापरवाही या सावधानी हटती है तो मनुष्य बड़ी ठगी का शिकार हो सकता है। अत: इंटरनेट या अन्य संचार के माध्यमों का प्रयोग करते वक्त अधिक-से-अधिक सावधानी बरतने की आवश्यकता है।

(c) खेलों का बढ़ता व्यवसायीकरण

भारत में प्राचीन समय से ही कई प्रकार के खेल खेले जाते हैं और देश का राष्ट्रीय खेल हॉकी को माना जाता है। विशेष रूप से, बच्चे खेलने के बहुत अधिक शौकीन होते हैं। वे आस-पास के क्षेत्र में, पार्कों, बगीचों में खेलते हैं। इसके साथ ही वह आमतौर पर स्कूलों में होने वाले खेलों में भी भागीदारी लेते हैं। स्कूल स्तर पर, जिला स्तर पर, राज्य स्तर पर, राष्ट्रीय स्तर पर और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर देश के बच्चों और युवाओं की अधिकतम भागीदारी के लिए बहुत सी खेल गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। यद्यपि, कभी-कभी राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जैसे- ओलंपिक या कॉमनवेल्थ खेलों में खिलाड़ियों का खराब प्रदर्शन भारत में खिलाड़ियों के लिए अच्छी खेल सुविधाओं की कमी और अभाव को प्रदर्शित करता है।

प्राचीन यूनानी काल में कई तरह के खेलों की परंपरा स्थापित थी और ग्रीस की सैन्य संस्कृति और खेलों के विकास ने एक दूसरे को काफी प्रभावित किया। खेल उनकी संस्कृति का एक ऐसा प्रमुख अंग बन गया कि यूनान ने ओलंपिक खेलों का आयोजन करना शुरु कर दिया, जो प्राचीन समय में हर चार साल पर पेलोपोनिस के एक छोटे से गाँव में ओलंपिया नाम से आयोजित किये जाते थे। खेल को पूर्ण व्यवस्थित रूप सर्वप्रथम यूनानियों ने ही दिया था। उनकी नागरिक व्यवस्था में खेल का महत्त्वपूर्ण स्थान था। उस युग में ओलंपिक खेलों में विजय मनुष्य की सबसे बड़ी उपलब्धि समझी जाती थी। गीतकार उनकी प्रशंसा में गीत लिखते थे और कलाकार उनके चित्र तथा मूर्तियां बनाते थे।

अभी भी भारतीय एथलीट अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के खेलों में मानक स्थिति को प्राप्त नहीं कर पाए हैं हालांकि, यह लगता है कि आने वाले समय में वे ऐसा कर पाएंगे क्योंकि वर्तमान सालों में खेलों का क्षेत्र बढ़ गया है। इसे देश की सरकार द्वारा स्कूल और कॉलेजों में बड़े स्तर पर बढ़ावा दिया जा रहा है। भारतीय एथलीट (खिलाड़ी) हर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के खेल में अपनी पूर्ण भागीदारी दिखा रहे हैं और लगातार गुणवत्ता और मानक हासिल करने के लिए कोशिश कर रहे हैं। भारतीय खिलाड़ियों ने पिछले ओलंपिक खेलों में बहुत कम स्वर्ण पदक जीते थे हालांकि, वे बहुत ही साहस और उत्साह के साथ खेले थे, जिसने दर्शकों को काफी उत्साहित किया। भारत हॉकी, कुश्ती, क्रिकेट, आदि कई खेलों में अग्रणी है।

खेलों के बढ़ते व्यवसायीकरण के कारण रोजगार की प्रबल संभावनाएं बढ़ी है। आज हर क्षेत्र में चाहे वह रेलवे का क्षेत्र हो, सैन्य क्षेत्र हो, पुलिस सेवा का क्षेत्र हो, लगभग हर क्षेत्र में खिलाड़ियों के लिए अलग से पद रिजर्व किए गए हैं। इसके कारण वर्तमान समय में युवा अलग-अलग प्रतिस्पर्धा में भाग ले रहे हैं और अपने भविष्य को संवार रहे हैं। हालांकि इस क्षेत्र को और अधिक सुधारने की आवश्यकता है। क्योंकि खेलों में आज भी सीमित क्षेत्रों एवं राज्यों का ही वर्चस्व बना हुआ है । बहुत से खिलाड़ियों के पास आज भी सुविधाओं का अभाव है जिसकी वजह से वे खिलाड़ी अपने आप को सिद्ध नहीं कर पाते। हर राज्य में खिलाड़ियों को उच्च स्तर की सुविधा प्रदान करने की

आवश्यकता है। हालांकि अब हर स्तर पर खेलों के सुधार हेतु कदम उठाए जा रहे हैं। सबसे अच्छे खिलाड़ी का चुनाव उन विद्यार्थियों में से किया जाता है, जो स्कूली स्तर और राज्य स्तर पर बहुत अच्छा खेलते हैं। अब भारत में खेलों की स्थिति बदल गई है और यह लोकप्रियता और सफलता पाने का अच्छा क्षेत्र बन गया है। यह शिक्षा से अलग नहीं है और यह भी आवश्यक नहीं है कि, यदि कोई अच्छा खेल खेलता है, तो उसके लिए शिक्षा की आवश्यकता नहीं है या यदि कोई पढ़ने में अच्छा है तो खेलों में शामिल नहीं हो सकता। इसका अर्थ यह है कि कोई भी व्यक्ति खेलों में भाग ले सकता हैं, चाहे वह शिक्षित हो या अशिक्षित। शिक्षा और खेल एक ही सिक्के अर्थात् सफलता के दो पहलू हैं। विद्यार्थियों के लिए स्कूलों में खेल खेलना अनिवार्य कर दिया गया है, इसके साथ ही शिक्षकों और अभिभावकों को उनके स्तर पर उनके विकास और वृद्धि के साथ ही देश का भविष्य बनाने के लिए खेल खेलने के लिए भी प्रेरित करना चाहिए।

(d) खान-पान का स्वास्थ्य पर प्रभाव

भोजन न केवल हमें जीवित रखता है, अपितु हमें स्वस्थ और निरोग बनाता है। कुछ लोग यह मानते हैं कि खान-पान का हमारे शरीर पर गलत प्रभाव पड़ता है जबकि ऐसा नहीं होता है। गलत समय पर गलत तरीके से अधिक या कम खाने का बुरा प्रभाव शरीर पर पड़ता है।

स्वास्थ्य वैज्ञानिक आजकल खान-पान की बदलती प्रवृत्तियों को स्वास्थ्य के लिये खतरनाक बता रहे हैं। आज का युवा वर्ग बाजार में बने भोज्य पदार्थों के साथ ही ठंडे पेय का उपयोग कर रहा है, जिस कारण बड़ी आयु में होने वाले विकार अब उनमें भी दिखाई देने लगे हैं। जहां पहले युवा वर्ग को देखकर यह माना जाता था कि वह एक बेहतर स्वास्थ्य का स्वामी है और चाहे जो काम करना चाहे कर सकता है। पर अब यह सोच खत्म हो रही है। अपच्य भोज्य पदार्थों और ठंडे पेय का सेवन युवाओं के शरीर में ऐसे विकारों को पैदा कर रहा है जो 60-70 वर्ष की आयु में होते हैं। मनु स्मृति में कहा गया है

न भोजनजीतोद्धतस्नेहं नातिसौहित्यमाचरेत।
नातिप्रगे नातिसायं न सत्यं प्रतराशितः॥

अर्थात -जिन पदार्थों से चिकनाई निकलती हो उनका सेवन करना ठीक नहीं है। दिन में कई बार पेट भरकर, बहुत सवेरे अथवा बहुत शाम हो जाने पर भोजन नहीं करना चाहिए। प्रात:काल अगर भरपेट भोजन कर लिया तो फिर शाम को नहीं करना चाहिए। 'स्वास्थ्य वैज्ञानिकों' के अनुसार हमारे भोजन का परंपरागत स्वरूप ही स्वास्थ्य के लिए उपयुक्त है। इस संबंध में भागवत गीता में कहा गया है कि रस और चिकनाई युक्त, देर तक स्थिर रहने वाले तथा पाचक भोजन सात्विक मनुष्य को प्रिय होता है। भारत जैसे विकासशील देशों में संतुलित भोजन न लेने के कारण कमजोरी, कुपोषण, शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता की कमी तथा अन्य विभिन्न रोग बहुत बड़ी समस्याएं उत्पन्न कर रहे हैं। बच्चों और स्त्रियों में बहुत-से रोगों की जड़ में संतुलित भोजन न लेने के कारण होने वाला कुपोषण ही होता है। प्रतिवर्ष लाखों बच्चे रोगों के कारण मृत्यु को प्राप्त होते हैं। इस तरह संतुलित एवं पौष्टिक भोजन का महत्त्व अपने आप ही जाहिर हो जाता है। इसी तरह भारत में प्रतिवर्ष

40 हजार बच्चे विटामिन 'ए' की कमी के कारण अंधे हो जाते हैं। कुपोषण के कारण बच्चों की रोगों से लड़ने की शक्ति कम हो जाती है और उन्हें संक्रामक रोग शीघ्र जकड़ लेते हैं। खाने में सभी जरूरी प्रोटीन, विटामिन आदि को संतुलित मात्रा में शामिल करना ही संतुलित भोजन है। हमारे शरीर को कार्य करने के लिए ऊर्जा (शक्ति) एवं शरीर के विकास के लिए कई तरह के खाद्य पदार्थों की जरूरत होती है। ये विभिन्न खाद्य हमें भोजन द्वारा प्राप्त होते हैं। संतुलित भोजन के आवश्यक खाद्य पदार्थ हैं- (1) कार्बोहाइड्रेट्स, (2) प्रोटीन्स, (3) वसा, (4) विटामिन्स, (5) खनिज-लवण, (6) साफ पानी। ये 6 सामग्री भोजन में शामिल करना ही संतुलित भोजन है। याद रखें संतुलित भोजन भी बच्चों और बड़ों को कई तरह के संक्रमणों से सुरक्षित रखता है।

जहां बहुत-से लोग आर्थिक स्थिति की वजह से कुपोषण के शिकार हो रहे हैं, वहीं बहुत-से लोग आर्थिक स्थिति सही होने के साथ बाजारू भोजन जैसे बर्गर, पीज्जा, बड़ा पाव, आदि पर अधिक निर्भर हो गए हैं।

आज लोग पौष्टिक आहार को कम; फास्ट फूड या जंक फूड को ज्यादा तवज्जो देने लगे हैं, लेकिन जंक फूड हमारी जिंदगी को कितना नुकसान पहुंचा सकते हैं आपको अंदाजा नहीं है। एक शोध की माने तो जंक फूड खाने से दिमाग में गड़बड़ी पैदा होने लगती है। निरंतर फास्ट फूड के सेवन से आप शिथिल होते जाते हैं। हम खुद को थका हुआ महसूस करने लगते हैं। आवश्यक पोषक तत्व जैसे प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट की कमी की वजह से फास्ट फूड आपकी ऊर्जा के स्तर को कम कर देता है। जंक फूड का लगातार सेवन किशोरों में डिप्रेशन का कारण बन सकता है। बढ़ती उम्र में बच्चों में कई तरह के बायोलॉजिकल बदलाव आने लगते हैं। जंक फूड जैसे चाउमीन, पिज्जा, बर्गर, रोल खाना बढ़ते बच्चों के लिए एक समस्या बन सकता है और वह डिप्रेशन में भी जा सकता है।

अत: वर्तमान समय में खान-पान की बदलती इस प्रकृति को ध्यान में रखना होगा और कोशिश करनी होगी कि जहां तक संभव हो प्रोटीन एवं कार्बोहाइड्रेट युक्त भोजन का सेवन किया जाए, जिससे हमारा शारीरिक स्वास्थ्य एवं मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहे।

Q2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट, सही और संक्षिप्त भाषा में दीजिए: (12×5 = 60)

औपनिवेशिक शासन बेहिसाब आँकड़ों और जानकारियों के संग्रह पर आधारित था। अंग्रेजों ने अपने व्यवसायिक मामलों को चलाने के लिए व्यापारिक गतिविधियों का विस्तृत ब्यौरा रखा था। बढ़ते शहरों में जीवन की गति और दिशा पर नजर रखने के लिए वे नियमित रूप से सर्वेक्षण करते थे, सांख्यिकीय आँकड़े इकट्ठा करते थे और विभिन्न प्रकार की सरकारी रिपोर्टें प्रकाशित करते थे।

प्रारम्भिक वर्षों से ही औपनिवेशिक सरकार ने मानचित्र तैयार करने पर खास ध्यान दिया। सरकार का मानना था कि किसी जगह की बनावट और भूदृश्य को समझने के लिए नक्शे जरूरी होते हैं। इस जानकारी के सहारे वे इलाके पर ज्यादा बेहतर नियंत्रण कायम कर सकते थे। जब शहर बढ़ने लगे तो न केवल उनके विकास की योजना तैयार करने के लिए बल्कि व्यवसाय को विकसित करने और अपनी सत्ता मजबूत करने के लिए

भी नक्शे बनाये जाने लगे। शहरों के नक्शों से हमें उस स्थान पर पहाड़ियों, नदियों व हरियाली का पता चलता है। ये सारी चीजें रक्षा संबंधी उद्देश्यों के लिए योजना तैयार करने में बहुत काम आती हैं। इसके अलावा घाटों की जगह, मकानों की सघनता और गुणवत्ता तथा सड़कों की स्थिति आदि से इलाके की व्यावसायिक संभावनाओं का पता लगाने और कराधान (टैक्स व्यवस्था) की रणनीति बनाने में मदद मिलती है।

उन्नीसवीं सदी के आखिर से अंग्रेजों ने वार्षिक नगरपालिका कर वसूली के जरिए शहरों के रखरखाव के वास्ते पैसा इकट्ठा करने की कोशिशें शुरू कर दी थीं। टकरावों से बचने के लिए उन्होंने कुछ जिम्मेदारियाँ निर्वाचित भारतीय प्रतिनिधियों को भी सौंपी हुई थीं। आंशिक लोक-प्रतिनिधित्व से लैस नगरनिगम जैसे संस्थानों का उद्देश्य शहरों में जलापूर्ति, निकासी, सड़क निर्माण और स्वास्थ्य व्यवस्था जैसी अत्यावश्यक सेवाएँ उपलब्ध कराना था। दूसरी तरफ, नगरनिगमों की गतिविधियों से नए तरह के रिकॉर्ड्स पैदा हुए जिन्हें नगरपालिका रिकॉर्ड रूम में सँभालकर रखा जाने लगा।

शहरों के फैलाव पर नज़र रखने के लिए नियमित रूप से लोगों की गिनती की जाती थी। उन्नीसवीं सदी के मध्य तक विभिन्न क्षेत्रों में कई जगह स्थानीय स्तर पर जनगणना की जा चुकी थी। अखिल भारतीय जनगणना का पहला प्रयास 1872 में किया गया। इसके बाद, 1881 से दशकीय (हर 10 साल में होने वाली) जनगणना एक नियमित व्यवस्था बन गई। भारत में शहरीकरण का अध्ययन करने के लिए जनगणना से निकले आँकड़े एक बहुमूल्य स्रोत हैं।

जब हम इन रिपोर्टों को देखते हैं तो ऐसा लगता है कि हमारे पास ऐतिहासिक परिवर्तन को मापने के लिए ठोस जानकारी उपलब्ध है। बीमारियों से होने वाली मौतों की सारणियों का अन्तहीन सिलसिला, या उम्र, लिंग, जाति एवं व्यवसाय के अनुसार लोगों को गिनने की व्यवस्था से संख्याओं का एक विशाल भंडार मिलता है जिससे सटीकता का भ्रम पैदा हो जाता है। लेकिन इतिहासकारों ने पाया है कि ये आँकड़े भ्रामक भी हो सकते हैं। इन आँकड़ों का इस्तेमाल करने से पहले हमें इस बात को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि आँकड़े किसने इकट्ठा किए हैं, और उन्हें क्यों तथा कैसे इकट्ठा किया गया था। हमें यह भी मालूम होना चाहिए कि किस चीज को मापा गया था और किस चीज को नहीं मापा गया था।

(a) औपनिवेशिक शासन चलाने में आँकड़ों का क्या महत्त्व था? (12)
(b) औपनिवेशिक शासनों के लिए मानचित्र क्यों महत्त्वपूर्ण थे? (12)
(c) औपनिवेशिक अभिलेखों के माध्यम से शहरीकरण का अध्ययन किस प्रकार किया जा सकता है (12)
(d) इतिहासकार आँकड़ों को सदैव अहानिकर क्यों नहीं मानते? (12)
(e) औपनिवेशिक शासकों की करों से संबंधित नीति क्या थी? (12)

Ans. (a) ब्रिटिश काल में शहरों के संचालन में आँकड़ों का उपयोग किया जाता था। विभिन्न प्रकार की व्यावसायिक गतिविधियों से संबंधित आँकड़ें भी इकट्ठा किए जाते थे।

(b) औपनिवेशक शासकों ने नगरीय क्षेत्रों तथा ग्रामीणों क्षेत्रों का मानचित्र तैयार कराया ताकि जगहों तथा भूदृश्यों की स्थिति का विवरण प्राप्त हो सकें जिससे प्रशासनिक कार्यों हेतु मदद की जा सके।

(c) औपनिवेशिक अभिलेखों के माध्यम से शहरों का अध्ययन किया जाता था। जिसमें सामिल था- स्थानीय पहाड़ी क्षेत्रों और नदियाँ की स्थिति, घाटों का स्थान, भवनों की सघनता तथा सड़कों की स्थिति इत्यादि।

(d) इतिहासकारों की दृष्टि में आँकड़ों का बहुत महत्व होता है परन्तु इसका संग्रह गुणवत्तापूर्ण तरीके से होना चाहिए तथा प्रामाणित साक्ष्यों के आधार पर विश्लेषण किया जाना चाहिए।

(e) ब्रिटिश सरकार ने शहरी क्षेत्रों के रखरखाव हेतु कर इकट्ठा करना शुरू कर दिया था जिससे जलापूर्ति, निकासी हेतु सड़क तथा स्वास्थ्य सेवाओं की व्यवस्था की जा सके।

Q3. निम्नलिखित अनुच्छेद का संक्षेपण लगभग एक-तिहाई शब्दों में लिखिए। इसका शीर्षक लिखने की आवश्यकता नहीं है। संक्षेपण अपने शब्दों में ही लिखिए। (60)

साधारणतया 'विकास' शब्द से अभिप्राय समाज विशेष की स्थिति और उसके द्वारा अनुभव किए गए परिवर्तन की प्रक्रिया से होता है। मानव इतिहास के लंबे अंतराल में समाज और उसके जैव-भौतिक पर्यावरण की निरंतर अंत:क्रियाएँ समाज की स्थिति का निर्धारण करती हैं। मानव और पर्यावरण अंत:क्रिया की प्रक्रियाएँ इस बात पर निर्भर करती हैं कि समाज ने किस प्रकार की प्रौद्योगिकी विकसित की है और किस प्रकार की संस्थाओं का पोषण किया है। प्रौद्योगिकी और संस्थाओं ने मानव-पर्यावरण अंत:क्रिया को गति प्रदान की है तो इससे पैदा हुए संवेग ने प्रौद्योगिकी का स्तर ऊँचा उठाया है और अनेक संस्थाओं का निर्माण और रूपांतरण किया है। अत: विकास एक बहु-आयामी संकल्पना है और अर्थव्यवस्था, समाज तथा पर्यावरण में सकारात्मक व अनुत्क्रमणीय परिवर्तन का द्योतक है।

विकास की संकल्पना गतिक है और इस संकल्पना का प्रादुर्भाव 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ है। द्वितीय विश्व युद्ध के उपरांत विकास की संकल्पना आर्थिक वृद्धि की पर्याय थी जिसे सकल राष्ट्रीय उत्पाद, प्रति व्यक्ति आय और प्रति व्यक्ति उपभोग में समय के साथ बढ़ोतरी के रूप में मापा जाता है। परंतु अधिक आर्थिक वृद्धि वाले देशों में भी असमान वितरण के कारण गरीबी का स्तर बहुत तेजी से बढ़ा। अत: 1970 के दशक में 'पुनर्वितरण के साथ वृद्धि' तथा 'वृद्धि और समानता' जैसे वाक्यांश विकास की परिभाषा में शामिल किए गए। पुनर्वितरण और समानता के प्रश्नों से निपटते हुए यह अनुभव हुआ कि विकास की संकल्पना को मात्र आर्थिक प्रक्षेत्र तक ही सीमित नहीं रखा जा सकता। इसमें लोगों के कल्याण और रहने के स्तर, जन स्वास्थ्य, शिक्षा, समान अवसर और राजनीतिक तथा नागरिक अधिकारों से संबंधित मुद्दे भी सम्मिलित हैं। 1980 के दशक तक विकास एक बहु-आयामी संकल्पना के रूप में उभरा जिसमें समाज के सभी लोगों के लिए वृहद् स्तर पर सामाजिक एवं भौतिक कल्याण का समावेश है।

1960 के दशक के अंत में पश्चिमी दुनिया में पर्यावरण संबंधी मुद्दों पर बढ़ती जगरूकता की सामान्य वृद्धि के कारण सतत पोषणीय धारणा का विकास हुआ। इससे पर्यावरण पर औद्योगिक विकास के अनापेक्षित प्रभावों के विषय में लोगों की चिंता प्रकट होती थी।

पर्यावरणीय मुद्दों पर विश्व समुदाय की बढ़ती चिंता को ध्यान में रखकर संयुक्त राष्ट्र संघ ने 'विश्व पर्यावरण और विकास आयोग (WCED)' की स्थापना की जिसकी प्रमुख नार्वे की प्रधानमंत्री ग्रो हरलेम ब्रंटलैंड थीं। इस आयोग ने अपनी रिपोर्ट 'अवर कॉमन फ्यूचर' (जिसे ब्रंटलैंड रिपार्ट भी कहते हैं) 1987 में प्रस्तुत की। WCED ने सतत पोषणीय विकास की सीधी-सरल और वृहद् स्तर पर प्रयुक्त परिभाषा प्रस्तुत की। इस रिपोर्ट के अनुसार सतत पोषणीय विकास का अर्थ है-''एक ऐसा विकास जिसमें भविष्य में आने वाली पीढ़ियों की आवश्यकता पूर्ति को प्रभावित किए बिना वर्तमान पीढ़ी द्वारा अपनी आवश्यकता की पूर्ति करना''। **(445 शब्द)**

Ans. **अनुच्छेद का संक्षेपण:** विकास एक बहुआयामी संकल्पना है तथा यह अर्थव्यवस्था, समाज तथा पर्यावरण में सकारात्मक व अनुत्क्रमणीय बदलाव को व्यक्त करता है। समाज तथा उसके जैव भौतिक पर्यावरण की निरंतर होने वाली अंत:क्रियाएं समाज की स्थिति का निर्धारण करती हैं। विकास की संकल्पना को केवल आर्थिक विकास तक ही सीमित नहीं रखा जा सकता है। इसमें जीवन स्तर, जन-स्वास्थ्य शिक्षा की व्यवस्था, अवसर की उपलब्धता, राजनीतिक स्थिति तथा नागरिक अधिकारों से संबंधित मुद्दों को भी शामिल किया जाना चाहिए। 1960 के दशक के बाद सतत् पोषणीय विकास की अवधारणा भी विकसित हुई है जिससे पर्यावरण समस्याओं को अनदेखा न किया जा सके। संयुक्त राष्ट्र संघ ने पर्यावरण तथा विकास आयोग की स्थापना की। इस आयोग ने 1987 में सतत् पोषणीय विकास की व्यापक परिभाषा प्रस्तुत की।

Q4. निम्नलिखित गद्यांश का अंग्रेज़ी में अनुवाद कीजिए: (20)

प्रेमचंद ने कहा था कि कहानियाँ तो चारों तरफ हवा में बिखरी पड़ी हैं, सवाल उन्हें पकड़ने का है। ऐसा इसलिए है कि हर व्यक्ति और हर वस्तु का अपना-अपना जीवन होता है, बाकी सबसे अलग। उसका एक आरंभ, विकास और फिर अंत भी होता है। सबकी कोई न कोई कहानी होती है। जिस तरह एक व्यक्ति दूसरे से हू-ब-हू नहीं मिलता, वैसी ही उसकी अपनी जीवन-कथा भी दूसरे से नहीं मिलती।

ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है अपनी कथा न लिख सके। मेरी आत्मकथा मेरे जीवन की कथा है। यह केवल मेरी कथा है। और जहाँ तक मेरा जीवन दूसरों के जीवन को छूता है वहाँ तक यह दूसरों की भी कथा है। और जहाँ तक मेरा जीवन एक समय, समाज या समूह का प्रतिनिधि जीवन होता है वहाँ तक वह सबकी कथा बन जाती है। प्रत्येक व्यक्ति का जीवन कथा में बदलने के योग्य है।

आप कलम हाथ में लेते हैं और कागज पर कुछ लिखने लगते हैं। सबसे अच्छा है अपने जीवन से शुरू किया जाए। अपने बारे में, बचपन से लेकर अब तक जो-जो हुआ वह सब। यही तो आत्मकथा है। आत्मकथा की पहली शर्त है साफ-साफ सच-सच कहना। इसके लिए भी अभ्यास जरूरी है। नैतिक साहस जरूरी है। अगर पूरी आत्मकथा न

भी लिखी जाए तो संस्मरण या डायरी लिखी जा सकती है। कई दिनों-वर्षों की डायरी आत्मकथा बन जाती है।

Ans. Premchand said that stories were scattered all around in the surrounding, the question is to perceive them. It is because every person and thing has its own life, different from the rest one. It has a beginning, a development and then an end. Everyone has some story. Just as one person does not show similarity with other one , similarly his own life-story also does not get from another. There is no person who cannot write his own story. My autobiography is the story of my life. This is only my story. And so far as my life touches the lives of others, it is also the story of others. And so far as my life is representative of one time, society or group, it becomes the story of all. The life of everyone is capable of turning into a story.

You take a pen in your hand and start writing something on the paper. It is best to start with your own life. About oneself, everything that happened from childhood till now. This is the autobiography. The first condition of an autobiography is to tell the truth clearly.

For this also practice is necessary. Moral courage is essential. A memoir or a diary can be written even if the complete autobiography is not written. A diary of days and years becomes an autobiography.

Q5. निम्नलिखित गद्यांश का हिंदी में अनुवाद कीजिए: **(20)**

Socrates was one of the celebrated Greek thinkers who became very influential in the development of Greek philosophy in particular and Western philosophy in general.

Socrates tried to bring radical changes in the society. But his attempts in the social field were not accepted and appreciated by the authorities. But convinced of his principles Socrates continued his efforts. The authorities considered him as a threat to their existence and as a result he was arrested and sent to prison. Later, he was given capital punishment because he was frank and outspoken. When he received the news of the death penalty he was not at all shaken.

It confused all the officials and even Socrates' own disciples because they had never seen a person accepting the news of his death penalty with a smiling face. When asked why so, he replied, "I have been preparing for death all my life. I have never done anything wrong to any man. That is why I am able to accept even death with a smiling face."

In his use of critical reasoning, by his unwavering commitment to truth and through the vivid example of his own life, Socrates set the standard for all subsequent Western philosophy.

Ans. सुकरात प्रसिद्ध यूनानी विचारकों में से एक थे, जो सामान्य रूप से पश्चिमी दर्शन तथा विशेष रूप से यूनानी दर्शन के विकास में बहुत प्रभावशाली हो गए थे।

सुकरात ने समाज में आमूलचूल परिवर्तन लाने की कोशिश की, लेकिन सामाजिक क्षेत्र में उनके प्रयासों को अधिकारियों द्वारा स्वीकार और सराहा नहीं गया, लेकिन अपने सिद्धांतों से आश्वस्त सुकरात ने अपने प्रयासों को जारी रखा। अधिकारियों ने उनको

अपने अस्तित्व के लिए खतरा माना और परिणामस्वरूप उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। बाद में, उन्हें मृत्युदंड दिया गया, क्योंकि वे स्पष्ट और मुखर थे, जब उन्हें मृत्युदंड की खबर मिली तो वे बिल्कुल भी विचलित नहीं हुए।

इसने सभी अधिकारियों और यहाँ तक कि सुकरात के अपने शिष्यों को भी भ्रमित कर दिया क्योंकि उन्होंने कभी किसी व्यक्ति को उसकी मृत्युदंड की खबर को स्वीकार करके उसपर मुस्कुराते हुए नहीं देखा था। जब उनसे पूछा गया कि ऐसा क्यों है, तो उन्होंने जवाब दिया, "मैं जीवन भर मौत की तैयारी करता रहा हूं, मैंने कभी किसी आदमी के साथ कुछ गलत नहीं किया। इसलिए मैं मुस्कुराते हुए मौत को भी स्वीकार करने में सक्षम हूं।"

आलोचनात्मक तर्क के उपयोग में, सत्य के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता और अपने स्वयं के जीवन के ज्वलंत उदाहरण द्वारा सुकरात के बाद के सभी पश्चिमी दर्शन के लिए मानक निर्धारित किए।

Q6. (a) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए: **(2×5 = 10)**

(i) नाक पर मक्खी न बैठने देना 2

(ii) छाती पर साँप लोटना 2

(iii) बंदर घुड़की देना 2

(iv) गिन-गिनकर पैर रखना 2

(v) मिट्टी में मिलना 2

(b) निम्नलिखित वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए: **(2×5 = 10)**

(i) कई रेलवे के कर्मचारियों ने अवकाश लिया। 2

(ii) साहित्य और समाज का घोर संबंध है। 2

(iii) तब शायद यह काम जरूर हो जाएगा। 2

(iv) लड़का मिठाई लेकर भागता हुआ घर आया। 2

(v) हमारे यहाँ तरूण नवयुवकों की शिक्षा का अच्छा प्रबंध है। 2

(c) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए: **(2×5 = 10)**

(i) स्वर्ण (ii) सूर्य (iii) हिमालय (iv) हाथी (v) अमृत

(d) निम्नलिखित युग्मों को इस तरह से वाक्य में प्रयुक्त कीजिए कि उनका अर्थ एवं अंतर स्पष्ट हो जाए: **(2×5 = 10)**

(i) आदि-आदी (ii) क्रांति-क्लांति (iii) नियत-नियति

(iv) प्रणय-परिणय (v) वित्त-वृत्त

Ans. (a) मुहावरों का अर्थ एवं उनका वाक्य प्रयोग:

(i) नाक पर मक्खी न बैठने देना - आँच न आने देना

वाक्य प्रयोग: सोहन के रहते हुए मोहन की नाक मक्खी बैठना संभव नहीं है।

(ii) छाती पर साँप लोटना - ईर्ष्या से हृदय जलना

वाक्य प्रयोग: मोहन कुमार को ऑफिस में पदोन्नति होने पर उसके सहकर्मियों के छाती पर साँप लोटने लगा।

(iii) बंदर घुड़की देना - व्यर्थ की धमकी देना

वाक्य प्रयोग: कई बार लोग सरकारी आफिसों में बंदर घुड़की से काम निकलवाना चाहते हैं परन्तु हर बार ऐसा नहीं होता है।

(iv) गिन-गिनकर पैर रखना - बहुत सावधानी बरतना
वाक्य प्रयोग: प्रतियोगिता के दौर में गिनगिनकर पैर रखना ही समझदारी है।

(v) मिट्टी में मिलाना - बर्बाद करना
वाक्य प्रयोग: सैनिकों ने आतंकी ठिकानों से मिट्टी में मिला दिया।

(b) वाक्यों के शुद्ध रूप:

(i) कई रेलवे के कर्मचारियों ने अवकाश लिया।
शुद्ध रूप: रेलवे के कई कर्मचारियों ने अवकाश लिया।

(ii) साहित्य और समाज का घोर संबंध है।
शुद्ध रूप: साहित्य और समाज के बीच गहरा संबंध है।

(iii) तब शायद यह काम जरूर हो जाएगा।
शुद्ध रूप: यह काम जरूर होगा।

(iv) लड़का मिठाई लेकर भागता हुआ घर आया।
शुद्ध रूप: मिठाई लेकर लड़का भागता हुआ घर आया।

(v) हमारे यहाँ तरूण नवयुवकों की शिक्षा का अच्छा प्रबंधन है।
शुद्ध रूप: हमारे यहाँ नवयुकों की शिक्षा का अच्छा प्रबंध है।

(c) पर्यायवाची शब्द :

(i) स्वर्ण = कनक, सोना
(ii) सूर्य = सूरज, रवि, दिनकर
(iii) हिमालय = गिरिराज, नगेश, नगपति
(iv) हाथी = गज, कुंजर, मतंग
(v) अमृत = सुधा, पीयुष, सोम

(d) शब्द युग्म का अर्थ एवं भेद :

(i) आदि = प्रारंभ
आदी = अभ्यस्त
वाक्य प्रयोग: राजू **आदि** से ही इस कार्य का **आदी** है।

(ii) क्रांति = उलटफेर होना
क्लांति = थकान
वाक्य प्रयोग: किसी में बड़ी **क्रांति** के बाद उसके कार्यकर्त्ताओं के चेहरे पर **क्लांति** दिखाई पड़ने लगती है।

(iii) नियत = निश्चित
नियति = भाग्य
वाक्य प्रयोग: जिसके **नियति** में जो लिखा है वह **नियत** ही है।

(iv) प्रणय = प्रेम
परिणय = विवाह
वाक्य प्रयोग: **प्रणय** का ज्यादातर परिणाम **परिणय** ही होता है।

(v) वित्त = आर्थिक
वृत्त = गोलाकार
वाक्य प्रयोग: कृपया करके **वित्त** व्यवस्था का चित्रांकन **वृत्त** रूप में व्यक्त कीजिए।

आगामी यू.पी.एस.सी. सी.एस. परीक्षाओं हेतु महत्त्वपूर्ण व्याकरण

शब्द-युग्म एवं उनके वाक्य - प्रयोग

1. अंजन - अजन
वाक्य प्रयोग = इस अजन (निर्जन) क्षेत्र में अंजित (काजल युक्त) नयनों का गुणगान कौन करेगा?

2. अंतर - अतर
वाक्य प्रयोग = यहां पर ऐसे भी लोग हैं जिन्हें इस अतर (इत्र) युक्त वातावरण में भी कोई अंतर (फर्क) की अनुभूति नहीं हो रही है।

3. अनल - अनिल
वाक्य प्रयोग = जैसे-जैसे अनिल (हवा) का प्रभाव बढ़ता गया, वैसे-वैसे अनल (आग) का क्षेत्र बढ़ता गया।

4. अचल - अचला
वाक्य प्रयोग = इस अचला (पृथ्वी) पर न जाने कितने ऊंचे-ऊंचे अचल (पर्वत) हैं, जिनसे नदियों का उद्गम हुआ है।

5. अथक - अकथ
वाक्य प्रयोग = अथक (न थकने वाला) परिश्रम से जो सफलता मिलती है उसका वर्णन अकथ (अकथनीय) है। उससे एक विशेष आनंद की प्राप्ति होती है।

6. अभिहित - अविहित
वाक्य प्रयोग = ऐसे वातावरण में इस प्रकार का अभिहित (कहा हुआ) कथन को कोई भी अविहित (अनुचित) ही कहेगा।

7. अपत्य - अपथ्य
वाक्य प्रयोग = उसके अपत्य (संतान) को तीन दिन से बुखार है, फिर भी वह अपथ्य (निषिद्ध भोजन) आहार के प्रति सजग नहीं है।

8. अर्थ - अर्द्ध
वाक्य प्रयोग = मोहित को अभी तक अर्द्ध (आधा) अर्थ (धन) की ही वापसी प्राप्त हुई है। आगे शेष राशि की उम्मीद नहीं है।

9. अविराम - अभिराम
वाक्य प्रयोग = रोहित के अभिराम (सुंदर) चित्रों की प्रशंसा अविराम (लगातार) बढ़ती ही जा रही है।

2021 Hindi Compulsory
[SOLVED]

(c) पर्यायवाची शब्द :

(i) पानी - जल, सलिल

(ii) कमल - पंकज, नीरज

(iii) पत्नी - गृहणी, बहू

(iv) बच्चा - बालक, शिशु

(v) पैर - चरण, पग

(d) शब्द युग्म का अर्थ एवं भेद :

(i) अवलंब - सहारा

अविलंब - झटपट

मुझे आपका अविलंब अवलंब चाहिए।

(ii) सबल - बलवान

संबल - सहारा

मुझे आप जैसे सबल व्यक्ति का संबल चाहिए।

(iii) जलद - बादल

जलज - कमल

जलद से गिरती पानी की बूँदें जलज पत्र पर शोभायमान हैं।

(iv) मातृ - माता

मात्र - केवल

मात्र मातृ सहारा ही शिशु के लिए लाभप्रद हो सकता है।

(v) गृह - भवन

ग्रह - आकाशीय पिंड (सूर्य की परिक्रमा करने वाले)

कल मैं अपने गृह के परिसर में बैठकर ग्रह-गति का अवलोकन कर रहा था।

यू.पी.एस.सी. सी.एस. 2021 (मुख्य परीक्षा)
हिन्दी अनिवार्य हल प्रश्न पत्र

(Held On Jan. 2022)

Time allowed : Three hours *Maximum Marks : 300*

प्रश्न-पत्र के लिए विशिष्ट अनुदेश:

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

- सभी प्रश्नों के उत्तर लिखना अनिवार्य है।
- प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने अंकित हैं।
- उत्तर हिन्दी में ही लिखे जाएँगे, यदि किसी प्रश्न-विशेष में अन्यथा निर्दिष्ट न हो।
- जिन प्रश्नों के संबंध में अधिकतम शब्द-संख्या निर्धारित है, वहाँ इसका अनुपालन किया जाना चाहिए। यदि किसी प्रश्न का उत्तर, निर्धारित शब्द-संख्या की तुलना में काफी लंबा या छोटा है तो अंकों की कटौती की जा सकती है।
- प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका का कोई भी पृष्ठ अथवा पृष्ठ का भाग, जो खाली छोड़ा गया हो, उसे स्पष्ट रूप से काट दिया जाना चाहिए।

Q1. **निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 600 शब्दों में निबंध लिखिए:** (100)

(a) बच्चों में कुपोषण की समस्या

(b) वैश्विक शांति की चुनौतियाँ

(c) मातृभाषा और प्राथमिक शिक्षा

(d) किराये की कोख की सामाजिक स्वीकृति

Ans. (a) **बच्चों में कुपोषण की समस्या**

कुपोषण की समस्या एक विश्वव्यापी समस्या है और अगर हम इसकी स्थिति पर नजर डालें तो विकासशील देशों में कुपोषण की समस्या लगातार बढ़ती जा रही है। इन कुपोषण से सर्वाधिक बच्चे विकासशील देशों में शिकार होते हैं। हमारे भारत देश में भी कुपोषण के आंकड़े चौंकाने वाले हैं, यहां लगभग 65% बच्चों का सामान्य से कम भार है, जिसका मुख्य कारण कुपोषण ही है जोकि पौष्टिक एवं संतुलित भोजन न मिलने के कारण होता है।

कुपोषण एक आम स्वास्थ्य समस्या है। कुपोषण या तो अपर्याप्त आहार या भोजन से पोषक तत्वों को अवशोषित करने में समस्या के कारण होता है। कम गतिशीलता, दीर्घकालिक स्वास्थ्य स्थिति या कम आय सहित इसके कई कारण हो सकते हैं। संपूर्ण रुप से संतुलित आहार तथा भोजन के अभाव में उत्पन्न शारीरिक दुर्बलता को ही कुपोषण कहा जाता है।

कुपोषण के कई मुख्य कारक होते हैं; जैसे कि अज्ञानता, निर्धनता, मिलावटी खाद्य पदार्थ, पर्याप्त व उचित भोजन की कमी, अधिक कार्यभार एवं गर्भवती स्त्री के उचित आहार में कमी आदि।

भारत में अधिकांश माता-पिता ग्रामीण परिवेश में रहने वाले होते हैं, इसीलिए उनके पास सुविधा होते हुए भी उन्हें संतुलित एवं पौष्टिक भोजन क्या होता है, उसके आवश्यक तत्व कौन-कौन से होते हैं, शरीर को कैसे भोजन की आवश्यकता होती है; इन सब बातों का ज्ञान नहीं होता है। इन सब बातों के ज्ञान के अभाव में वह अपने बच्चों को संतुलित आहार नहीं दे पाते, जिससे बच्चों में कुपोषण की स्थिति बन जाती है। हमारे देश में निर्धनता भी बच्चों में कुपोषण का मुख्य कारक है क्योंकि अधिकतर परिवार आज भी गरीबी रेखा से नीचे जीवन-यापन कर रहे हैं, जिसकी वजह से वे अपने बच्चों को संतुलित एवं पौष्टिक भोजन प्रदान करने में सक्षम नहीं हैं।

दूसरी सबसे बड़ी समस्या हमारे यहां खाद्य पदार्थों में मिलावट की है क्योंकि व्यापारियों और भोजन विक्रेताओं की स्वार्थपूर्ण नीति की वजह से हमारे देश में शुद्ध भोजन नहीं मिल पाता है। अधिक मुनाफे के चक्कर में घटिया और नुकसानदायक चीजें बाजार में बिक रही हैं, जिनमें पौष्टिक तत्वों का अभाव होता है, इसीलिए बच्चों को कुपोषण का शिकार होना पड़ता है।

अधिकतर गर्भवती महिलाओं को भी पर्याप्त भोजन नहीं मिल पाने के कारण भविष्य में आने वाला बच्चा भी कुपोषण का शिकार होता है क्योंकि जब मां में ही संतुलित आहार की कमी हो जाती है तो उसे वह पर्याप्त पोषण नहीं दे पाती। अत: कुपोषण की वजह से बच्चे रोगों का शिकार हो जाते हैं, उनका मानसिक विकास नहीं हो पाता, जिससे उनका शारीरिक विकास भी प्रभावित होता है।

कुपोषण को दूर करने के लिए संतुलित भोजन ही मुख्य आहार है क्योंकि इसमें शरीर को भोजन से प्राप्त होने वाले सभी तत्व आवश्यकता अनुसार होने चाहिए। बच्चों के व्यक्तिगत जीवन में शारीरिक क्रियाकलाप, मनोरंजन, नींद, विश्राम आदि का उचित स्थान होना चाहिए। इसके अतिरिक्त नियमित भोजन समय अनुसार होना चाहिए। स्कूल स्तर पर चलने वाली मिड डे मील जैसी परियोजनाओं में संतुलित एवं पौष्टिक भोजन की व्यवस्था हो, इस पर सरकार को और अधिक ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

क्योंकि बच्चे ही किसी देश के भविष्य की नीव होते हैं । अगर किसी देश के बच्चे ही कुपोषण का शिकार हो जाएंगे तो समझो उस देश का भविष्य ही कुपोषित हो जाएगा। इसीलिए बच्चों की स्वास्थ्य सुविधाओं पर माता-पिता और सरकार को अत्यधिक ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है, जिससे कि बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य और भी बेहतर हो सके और आने वाले समय में वे बच्चे अपनी क्षमताओं का प्रयोग देश के बेहतर विकास के लिए कर सकें।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि स्वास्थ्य विज्ञान के नियमों के पालन से ही कुपोषण से बचाव किया जा सकता है और इसके साथ व्यक्तिगत साफ-सफाई और स्वच्छता, योगासन, संबंधी नियम आदि का ज्ञान होना आवश्यक है और साथ में संतुलित आहार की जरूरत है।

(b) वैश्विक शांति की चुनौतियाँ

वैश्विक शांति सभी देशों एवं लोगों के लिए और उनके भीतर स्वतंत्रता, शांति और खुशी का एक आदर्श है। वैश्विक शांति पूरी पृथ्वी पर अहिंसा स्थापित करने का एक

माध्यम है, जिसके तहत देश स्वेच्छा से या फिर शासन की एक प्रणाली के माध्यम से सहयोग करते हैं, ताकि युद्ध को रोका जा सके। वैश्विक शांति बनाने के लिए सभी देश मिलकर सहयोग करते हैं, तभी जाकर वैश्विक शांति स्थापित हो सकती है।

परंतु वर्तमान समय में सभी देशों के बीच बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण वैश्विक शांति स्थापित करना काफी जटिल हो गया है। सभी देशों के बीच अनेक समस्याएं उभर कर सामने आ रही हैं, जिसकी वजह से वैश्विक तनाव बढ़ता जा रहा है; जिनमें से प्रमुख हैं- कई देशों के बीच बढ़ता सीमा तनाव, आतंकवाद, शरणार्थी संकट एवं घरेलू हिंसा आदि।

आतंकवाद एक प्रमुख वैश्विक चुनौती है। संघर्षरत क्षेत्रों से लेकर दूरदराज के शहरों की गलियों तक, आतंकवाद एक भयावह कीमत वसूलता है। कई देश आतंकवाद को राज्य नीति के एक साधन के रूप में प्रयोग कर रहे हैं। आतंकवाद को बढ़ावा देने के लिए कई माध्यमों का प्रयोग कर रहे हैं ,जिनमें साइबर स्पेस की महत्वपूर्ण भूमिका है। कई देश आतंकवाद की जद में आकर पूर्ण रूप से लगभग खत्म हो चुके हैं या बहुत बुरी स्थिति का सामना कर रहे हैं; जैसे कि अफगानिस्तान, ईरान और पाकिस्तान।

इन देशों में तालिबान जैसे आतंकवादी नेटवर्क काफी समय से स्थापित है, जोकि वैश्विक शांति स्थापित करने में सबसे बड़ी चुनौती है। अमेरिका जैसे विकसित और शक्तिशाली देश भी इसके सामने घुटने टेक चुके हैं। बढ़ते आतंकवाद की वजह से शरणार्थी समस्या बढ़ गई है जोकि वैश्विक शांति के लिए एक चुनौती है।

कई देशों के बीच बढ़ता सीमा विवाद भी वैश्विक शांति के लिए चुनौती के रूप में उभर रहा है; जैसे कि भारत एवं पाकिस्तान के बीच सीमा विवाद, भारत एवं चीन के बीच सीमा विवाद; इन विवादों को लेकर कई बार इन देशों के बीच युद्ध भी हो चुके हैं, परंतु अभी तक इन विवादों का कोई समाधान नहीं निकला। बढ़ती महामारी और पर्यावरण संकट भी वैश्विक शांति के रूप में चुनौती के रूप में उभर रहे हैं।

कोविड-19 जैसी महामारी ने संपूर्ण विश्व को प्रभावित किया है। वर्ष 2020-21 में विश्व में बहुत अनिश्चय की स्थिति रही, कई स्तरों पर दुख- दर्द बड़ा। दुनिया भर में कोविड-19 की समस्या ने सबको परेशान कर रखा है। कोविड-19 की दूसरी लहर ने भारत में भी कोहराम मचाया और अब ओमीक्रोन वैरीअंट के आने से महामारी की तीसरी लहर संपूर्ण विश्व के सर पर मंडरा रही है।

वहीं बढ़ता पर्यावरण संकट भी वैश्विक चुनौती के रूप में उभर रहा है, जिसकी वजह से विभिन्न देशों में भयानक बाढ़, भूकंप, ओलावृष्टि, हिम संकलन जैसी आपदाएं देखने को मिल रही हैं।

हालांकि इन बढ़ती वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए संयुक्त राष्ट्र महासभा जैसे संस्थान बने हुए हैं। विभिन्न देश एक ही प्लेटफार्म पर आकर इन चुनौतियों से निपटने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने भी अपने सदस्य देशों के संबोधन में 21वीं सदी की प्रमुख तीन चुनौतियों- जलवायु परिवर्तन, टिकाऊ विकास और नई तकनीक के

प्रसार से निपटने के लिए नई ऊर्जा के साथ प्रयास करने पर बल दिया है। संयुक्त राष्ट्र महासभा के महासचिव ने मुंह बाए खड़ी समस्याओं का जिक्र करते हुए कहा- "हिंसक संघर्ष से लाखों जानों का खतरा और रिकॉर्ड संख्या में लोगों को विस्थापन के लिए मजबूर होना पड़ रहा है, वैश्विक गरीबी खत्म करने के लक्ष्य से हम अभी काफी दूर हैं, जिसकी वजह से भुखमरी बढ़ रही है और जलवायु संकट कहर बरपा रहा है" इन सब मुद्दों से निपटने के लिए सभी देशों को एक वैश्विक मंच पर आना होगा और सहयोग करना होगा।

आतंकवाद, सीमा विवाद, गरीबी, भुखमरी, महामारी आदि वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए सभी देशों को कदम-से-कदम मिलाकर चलना होगा, एक वैश्विक प्लेटफार्म पर आकर इन मुद्दों को सुलझाना होगा तथा आतंकवाद जैसे गंभीर मुद्दे की रीढ़ को तोड़ना होगा, जिससे वैश्विक शांति स्थापित हो सके।

(c) मातृभाषा और प्राथमिक शिक्षा

जिस प्रकार से किसी बच्चे की प्रारंभिक गुरु उसकी मां होती है, वैसे ही बच्चों के जीवन में प्राथमिक शिक्षा का योगदान होता है। यह व्यक्ति के जीवन की व्यवस्था है जब उसके संपूर्ण जीवन के विकास क्रम को गति मिलती है। इस उम्र की शिक्षा जीवन की महत्वपूर्ण शिक्षा होती है। संभावनाओं से भरी इस अवस्था में अगर सही दिशा मिल जाए तो उस बच्चे का जीवन सफल हो जाता है, सही दिशा का तात्पर्य बच्चों का शारीरिक, बौद्धिक विकास, सर्जनात्मक और सौंदर्य बोध के विकास से है। इन लक्ष्यों को तभी प्राप्त किया जा सकता है, जब उस बच्चे से उसकी भाषा में उससे बात की जाए, यहां भाषा से तात्पर्य मातृभाषा से है क्योंकि शिक्षा बाल केंद्रित होती है और शिक्षक की भूमिका पथ प्रदर्शक की होती है। ऐसे में जरूरी हो जाता है कि बच्चों से उनकी ही भाषा में बात की जाए क्योंकि इससे बच्चों को स्वाभाविक विकास में सहायता मिलती है।

ऐसे में जब चारों ओर अंग्रेजी का बोलबाला है, विशेषकर यदि शिक्षा की बात की जाए तो हमारे देश में ऐसा माहौल है कि बिना अंग्रेजी शिक्षा के उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं की जा सकती।

मातृभाषा में दी जाने वाली शिक्षा से बच्चों की प्राथमिक शिक्षा की नींव मजबूत होती हैं क्योंकि यह बच्चों के लिए सामान्य बोलचाल की भाषा हो जाती है जो उनके घर-परिवार में भी प्रयोग की जाती है। इसीलिए बच्चों को इस भाषा में शिक्षा प्राप्त करने के लिए अधिक मेहनत करने की आवश्यकता नहीं होती है। गांधीजी ने हरिजन पत्रिका में लिखा है, "मातृभाषा माता के स्तन के समान होती है।" वहीं एक अन्य स्थान पर वे लिखते हैं, "यदि मेरे पास एक निरंकुश शासक की शक्तियां होतीं, तो आज ही विदेशी माध्यम के द्वारा दी जाने वाली पढ़ाई बंद करा देता।"

शिक्षा का अंतिम लक्ष्य बालक के व्यवहार में परिवर्तन लाना होता है और इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए विभिन्न गतिविधियों का सहारा लिया जाता है और यह इस बात पर निर्भर करता है कि क्या बालक शिक्षक के द्वारा दी गई शिक्षा को अच्छे से समझ रहा है। बालक शिक्षक की बातों को जितना समझेगा स्वभाविक रूप से उसका उतना ही अधिक विकास होगा, वह उतना ही मानसिक रूप से स्वतंत्र होगा और शिक्षक द्वारा दी गई यह समझ शिक्षक की भाषा पर भी निर्भर करती है।

वर्तमान में बढ़ते अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव के कारण अधिकतर बच्चे मानसिक तनाव से गुजर रहे हैं क्योंकि उनके घर की भाषा और स्कूल की भाषा में साम्यता का अभाव है। बच्चे के स्कूल की भाषा अभिभावक भी नहीं समझ पाते हैं, इसीलिए वह चाह कर भी बच्चों की पढ़ाई में मदद नहीं कर पाते हैं। इससे बच्चे और उनके बीच दूरी बनने लगती है, जबकि शिक्षा का उद्देश्य यह होता है कि अधिक- से-अधिक बच्चों को जोड़े रखना, तब जरूरी हो जाता है कि बच्चों से उनकी अपनी भाषा में बात की जाए। शिक्षा का उद्देश्य तभी पूर्ण होता है, जब शिक्षक और विद्यार्थी के बीच समझ का संबंध स्थापित हो, वह एक-दूसरे को समझ सकें और समझा सकें।

एनी बीसेंट का कहना है कि बालक को अंततोगत्वा समाज में ही रहना है। इस लिहाज से शिक्षा का उद्देश्य बालक का समाजीकरण है और समाजीकरण की प्रक्रिया का आधार ही भाषा है। जब तक बालक और समाज की भाषा में एकरूपता नहीं होगी तब तक इस प्रक्रिया में बाधा रहेगी। इसलिए श्रीमती बीसेंट ने प्राथमिक स्तर की शिक्षा हेतु मातृभाषा को ही प्राथमिकता दी है। वहीं मातृभाषा में शिक्षा को शिक्षा का माध्यम बनाने की वकालत करते हुए अंग्रेजी लेखक व विचारक वेल्सफोर्ड का कहना है कि केवल एक ही भाषा में हमारे भावों की स्पष्ट व्यंजना हो सकती है, केवल एक ही भाषा के शब्दों में सूक्ष्म संकेतों को हम सहज और निश्चित रूप से ग्रहण कर सकते हैं। यह वह भाषा होती है, जिसे हम अपनी माता के दूध के साथ सीखते हैं।

अत: प्राथमिक शिक्षा तभी सफल हो सकती है, जब वह उस बच्चे की मातृभाषा में दी गई हो।

(d) किराए की कोख की सामाजिक स्वीकृति

विज्ञान आज भगवान का रूप ले चुका है। विज्ञान ने हमारी जीवन-शैली को एक नई ऊंचाई दी है और यह सही भी है क्योंकि प्रगति और विकास के माध्यम से स्थापित होने वाली जीवन-शैली ही आधुनिकता कहलाती है, जिसके प्रभाव से समय-समय पर मानवीय जीवन-मूल्यों में कभी थोड़े-बहुत तो कभी ज्यादा परिवर्तन आते ही हैं। अब इसी विज्ञान का कमाल है कि जो दंपत्ति संतान सुख से विहीन थे, उनके लिए सरोगेसी की सुविधा उपलब्ध है, यानी कि किराए की कोख के द्वारा संतान को जन्म देना।

सरोगेसी यानी वास्तविक मां की जगह एक दूसरी महिला बच्चे को जन्म देने के लिए अपनी कोख का इस्तेमाल करती है। सरोगेसी को वह महिलाएं अपनाती हैं, जो बच्चे को जन्म देने में असमर्थ होती हैं।

आज जहां सब बिकता है हमने मां और ममता को भी बेच दिया। इतना आगे निकल गया है मानव! भगवान की भी जरुरत नहीं; ममता, जिस शब्द पर भगवान भी नतमस्तक हो जाते हैं आज बिकने लगी, लेकिन आज भारत जैसे गरीब और विकासशील देश में यह प्रकिया एक धंधे की भांति भी हो गयी है।

कुछ लोग तो इस प्रक्रिया को मजबूरी में अपना रहे हैं, जिन्हें भविष्य में संतान होने की संभावना नहीं है। इसके विपरीत कुछ अमीर लोग इस प्रक्रिया को मां

बनने की प्रक्रिया में जो शारीरिक कष्ट होता है उससे बचने के लिए किराए की कोख का इस्तेमाल कर रहे हैं।

भारतीय समाज बदलाव के बड़े निर्णायक और अनियमित दौर से गुजर रहा है, जहां तमाम पुरानी संस्थाएं और रीति-रिवाज अपनी प्रासंगिकता खो रहे हैं या फिर उन्हें समाज नए रूप से परिभाषित और स्वीकार कर रहा है। महाभारतकालीन नियोग और गर्भ प्रत्यारोपण प्रथा आज फिर से प्रासंगिक हो रही है, जिसे हाल तक का सभ्य समाज वर्जित मानता था। सेरोगेसी ऐसा ही एक मुद्दा है, जिसे समाज में लगातार स्वीकृति मिल रही है क्योंकि काफी ऐसी महिलाएं हैं जो वास्तविक तौर पर संतान को पैदा करने में सक्षम नहीं होतीं तो ऐसी महिलाओं के लिए यह वैज्ञानिक प्रक्रिया वरदान सिद्ध हुई है। यह स्वीकृति अनायास नहीं बल्कि जैविकीय समस्याओं के दबाव का परिणाम है। जैसे कि जब महाभारतकालीन कुरु साम्राज्य पर वंशविहीन होने का संकट खड़ा होता है, तब आज के विक्की डोनर की तरह महर्षि वेदव्यास से राजपरिवार की बहुएँ सहायता लेती हैं। आज इसी समस्या के चलते हुए यह घटना कानून और धीरे-धीरे समाज द्वारा मान्यता पा रही है। सेरोगेसी प्रक्रिया की नई अवधारणा सामने आ गई है।

दुनिया भर में परिवार नियोजन पर बहुत ध्यान दिया जाता है, लेकिन बंध्यापन की समस्या पर ध्यान कम है। इसकी वैज्ञानिक सच्चाई यह है कि बढ़ता तनाव एवं पर्यावरण प्रदूषण के बीच जीने वाले बहुत-से युवा जोड़े सफल सहवास क्षमता के बावजूद संतान उत्पादन में असमर्थ होते जा रहे हैं और मजबूरन संतान पैदा करने के लिए इस प्रक्रिया को अपना रहे हैं।

तकनीकी उन्नति से अस्तित्व में आई इस नई प्रक्रिया से कई समस्याओं और रिश्तों की जटिलता भी सामने आ रही है क्योंकि बहुत स्पष्ट तथ्य है, कि रिश्ते सामाजिक होते हैं जैविकीय नहीं। समाज में खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में इस प्रक्रिया से पैदा होने वाले बच्चों का अभी भी उपहास उड़ाया जाता है, क्योंकि समाज में कुछ लोग अभी भी उन माता-पिता की मजबूरी को नहीं समझ पाते जो संतान पैदा करने में सक्षम नहीं हैं।

हालांकि किराए की माँ का तात्पर्य किराए पर लिए जाने वाले गर्भाशय से है, गर्भ से नहीं। इस प्रक्रिया में जैविक रूप से बच्चा पूर्ण रूप से अपने माता-पिता का ही होता है। उसका समाज में वही दर्जा होता है जो सामान्य बच्चों का होता है। वर्तमान में हमारा समाज इस प्रक्रिया को अपनाने में कोई संकोच नहीं कर रहा है और इस प्रक्रिया को धीरे- धीरे सामाजिक मान्यता भी प्रदान हो रही है।

Q2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट, सही और संक्षिप्त भाषा में दीजिए: **(12×5 = 60)**

प्राचीन भारत में राजतंत्र का इतना प्रभाव था कि राजा को राज्य की आत्मा कहा गया। प्राचीन धार्मिक ग्रंथों के अनुसार राजा प्रजा के लिए ईश्वर का प्रतिनिधि है, ताकि प्रजा उसकी सहायता से अपने दुखी जीवन से छुटकारा पा सके। राजाविहीन समाज का जीवन कष्टपूर्ण होता है। प्राचीन भारतीय विद्वानों ने राजा या राज्य की उत्पति के संबंध

में समय-समय पर अनेक विचार प्रस्तुत किए हैं। उनको विभिन्न सिद्धांतों के रूप में निर्धारित किया गया है, जैसे - दैवीय सिद्धांत, शक्ति का सिद्धांत, सुरक्षा का सिद्धांत, सामाजिक समझौते का सिद्धांत आदि।

कौटिल्य ने राज्य को मानव जीवन के लिए एक महत्त्वपूर्ण, आवश्यक और कल्याणकारी संस्था माना है। उन्होंने राजा की उत्पत्ति की क्रपबद्ध विवेचना नहीं की, लेकिन उनके 'अर्थशास्त्र' में स्पष्ट उल्लेख है कि जैसे छोटी मछली को बड़ी मछली खा जाती है, उसी तरह प्राचीन काल में बलवान लोग निर्बल लोगों को सताते थे। इस अन्याय (मत्स्य न्याय) यानी जंगल राज से प्रजा पीड़ित थी। पीड़ित प्रजा ने मिलकर एक समर्थ व्यक्ति को अपना राजा नियुक्त किया। उन्होंने राजा को कृषि उपज का छठाँ भाग और व्यापार की आय का दसवाँ भाग देने का निश्चय किया। इसके बदले राजा ने प्रजा के कल्याण का दायित्व अपने ऊपर लिया। जो लोग राजा द्वारा की गई व्यवस्था को नहीं मानते थे, उन्हें वह दण्ड देता था। राजा को इन्द्र और यम के समान प्रजा का रक्षक और कृपा करने वाला माना गया है। कौटिल्य के अनुसार, राजा की आज्ञा का पालन न करना अथवा उसका अपमान निषिद्ध है।

जिस समाज में राजा द्वारा प्रजा को रक्षा प्रदान किया जाता है, वहाँ लोग निर्भय होकर घर के दरवाज़े खोलकर विचरण करते हैं। जब राजा रक्षा करता है तो स्त्रियाँ अकेली ही आभूषण पहन कर मार्ग में विचरण कर सकती हैं। राजा द्वारा रक्षित समाज में मानवता का साम्राज्य होता है। ऐसे राज्य में सब प्रकार की उन्नति होती हैं। अन्य प्राचीन ग्रंथों के साथ कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' में भी इस सत्य को प्रतिपादित किया गया है। पहले राजा का पद अस्थिर और शक्तियाँ नियंत्रित थीं। मगर उत्तर वैदिक काल में राज्यों का आकार ज्यों-ज्यों बढ़ता गया, त्यों-त्यों राजा के अधिकार एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होती गई। प्रजा की रक्षा की अपेक्षा राजा की रक्षा पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा। राज-पद की प्रतिष्ठा के अनुरूप राजा का वैभव, शान-शौकत और दिखावा बढ़ गया। शुक्र नीति में इसका विस्तृत वर्णन किया गया है।

(a) राजा और राज्य की प्राचीन अवधारणा क्या है? **(12)**

(b) 'मत्स्य न्याय' को अन्याय कहने का क्या अभिप्राय है? **(12)**

(c) राजा और प्रजा के आपसी सम्बन्धों का आधार क्या है? **(12)**

(d) 'मानवता का साम्राज्य' से क्या अभिप्राय है? **(12)**

(e) उत्तर वैदिक काल में प्रजा की स्थिति में क्या बदलाव हुए? **(12)**

Ans. (a) कौटिल्य के अनुसार, मानव समाज के लिए राज्य का होना आवश्यक तथा कल्याणकारी है। राज्य का मुखिया राजा को माना गया है। राजा के बिना कोई भी समाज कष्ट से मुक्त नहीं हो सकता है। प्राचीन विद्वानों ने समय-समय पर राजा या राज्य की उत्पत्ति के संबंध में अनेक विचार प्रस्तुत किए हैं।

(b) प्राचीन काल में बलवान लोग निर्बल लोगों को सताते थे, इसे ही मत्स्य न्याय या जंगल राज कहा जाता था।

(c) राजा को इन्द्र के समान प्रजा का रक्षक और कृपा करने वाला माना गया है। कौटिल्य के अनुसार, राजा की आज्ञा का पालन करना अनिवार्य है। राजा का कर्त्तव्य है कि वह प्रजा को पीड़ा से मुक्त रखे।

(d) 'मानवता का साम्राज्य' से अभिप्राय है, एक कल्याणकारी राज्य जिसमें प्रजा भय मुक्त हो। उसे अपनी उन्नति में कोई बाधा न आए। उन्नति में बाधक तत्वों का वह उन्मूलन करे।

(e) उत्तर वैदिक काल में राज्यों का आकार बढ़ता गया तथा राजा के अधिकार एवं धन दौलत में वृद्धि होती गई। प्रजा की रक्षा की अपेक्षा राजा की रक्षा पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा।

Q3. निम्नलिखित अनुच्छेद का संक्षेपण लगभग एक-तिहाई शब्दों में लिखिए। इसका शीर्षक लिखने की आवश्यकता नहीं है। संक्षेपण अपने शब्दों में ही लिखिए। (60)

राजा राममोहन राय के क्रियाकलापों के विरोधी भारतीय व्यापारियों ने ब्रह्म समाज के प्रभाव को खत्म करने के लिए 1830 ई. में एक धर्म समाज नामक संस्था की स्थापना की। इसी समय में हेनरी डेरोज़ियो ने आधुनिक ढंग के एक शैक्षिक संगठन, हिन्दू कॉलेज में अकादमिक एसोसिएशन की स्थापना की। यह संघ परंपरागत रूढ़ियों और अंधविश्वासों के विरोध में अन्य ऐसे संगठनों से अधिक दृढ़ था। इस संघ से ही युवा बंगाल की स्थापना हुई। हिन्दू कॉलेज के कर्मचारियों द्वारा तंग करने के कारण जब यह संगठन विघटित हो गया, तो इसके भूतपूर्व सदस्य ब्रह्म समाज में सम्मिलित हो गए। राममोहन राय की मृत्यु के बाद से इस समाज का नेतृत्व एक प्रमुख बंगाली व्यापारी द्वारकानाथ ठाकुर के हाथ में था। उन्नीसवीं शताब्दी के चौथे और पाँचवें दशकों के दौरान बंगाल में ज्ञान प्रसार और ऐसे ही अन्य लक्ष्यों के संवर्धक सामाजिक संगठन एक के बाद एक प्रकट हुए। अंत में 1851 ई. में कलकत्ता में ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन नामक एक परिपक्व राष्ट्रवादी राजनीतिक संगठन कायम किया गया।

इस तरह की घटनाएँ बंबई में भी देखी जा सकती थीं। देश के इस भाग में ऐसे आन्दोलनों के प्रमुख नेता धनी और सुसम्मानित पारसी थे, जो औपनिवेशिक शासन के साथ सहयोग कर रहे थे, और युवा उदीयमान महाराष्ट्रीय बुद्धिजीवी थे, जो यूरोपीय पद्धति पर संचालित स्थानीय शैक्षणिक संस्था, एलफिन्स्टन कॉलेज से जुड़े हुए थे। इन बुद्धिजीवियों में प्रमुख थे बालशास्त्री जाम्बेकर, जिन्होंने अंग्रेजी-मराठी साप्ताहिक 'बंबई दर्पण' की स्थापना की, जो अपने देश के प्रशासन में भारतीयों को हिस्सा लेने देने के लिए वकालत करता था तथा औपनिवेशिक कर एवं शुल्क नीतियों की आलोचना करता था; रामकृष्ण विश्वनाथ, जिन्होंने मराठी में भारत के इतिहास पर एक पुस्तक प्रकाशित की, जिसमें उन्होंने भारत में ब्रिटिश नीतियों की आलोचना की, हालाँकि उनका विचार था कि सब कुछ ठीक किया जा सकता है, बशर्ते कि प्रबुद्ध अंग्रेज़ों और भारतीयों के बीच घनिष्ठ संपर्क हो; गोपाल हरि देशमुख, जो पूरा के 'प्रभाकर' में लोकहितवादी के उपनाम से लिखते थे। उन्होंने भारत की स्वतंत्रता के अपहरण के कारणों का विश्लेषण किया, जो उनकी राय में पुरानी सामंती प्रथाओं का पालन और अभिजात वर्ग तथा भारतीय जनता को एक-दूसरे से पृथक् करने वाली खाई थे।

1852 में स्थापित बंबई एसोसिएशन में तब फूट पड़ गई, जब युवा छात्रों ने सभी भारतीयों के लिए अंग्रेज़ों के समान अधिकारों की माँग की, और नरमपंथी उच्च वर्गीय व्यापारी इससे अलग हो गए। अकेले मद्रास एसोसिएशन ने ही भारतीय ज़मींदारों

द्वारा किसानों के शोषण को बंद करने के प्रश्न को उठाया। उस समय ईस्ट इंडिया कंपनी के चार्टर का फिर पुनरीक्षण हो रहा था, इसलिए तीनों एसोसिएशनों ने भारत में औपनिवेशिक शासन के 'अन्यायों' के बारे में लंदन में संसद को याचिकाएँ भेजीं। (456 शब्द)

Ans. अनुच्छेद का संक्षेपण: सन् 1830 ई. में एक 'धर्म समाज' नामक संस्था की स्थापना की गई। जिसका मुख्य उद्देश्य ब्रह्म समाज के प्रभाव को समाप्त करना था। हेनरी डेरोज़ियो ने भी परंपरागत रूढ़ियों तथा अंधविश्वासों के विरोध में 'अकादमिक एसोसिएशन' की स्थापना की, जिससे आगे चलकर 'युवा बंगाल' नामक संघ का जन्म हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी के चौथे तथा पांचवें दशकों के दौरान बंगाल में इन उद्देश्यों के साथ कई सामाजिक संगठनों का प्रादुर्भाव हुआ, परंतु उनमें से सबसे प्रभावी संगठन 'ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन' रहा। इसी तरह की घटना बंबई में भी घटित हो रही थी जिसमें एक तरफ औपनिवेशिक शासन का समर्थन करने वाला पारसी समुदाय था तो दूसरी तरफ रामकृष्ण विश्वनाथ तथा बालशास्त्री जाम्बेकर जैसे बुद्धिजीवी लोग थे जो अपनी रचनाओं से ब्रिटिश नीतियों की आलोचना कर रहे थे। सन् 1852 में बंबई एसोसिएशन नरमपंथी व गरमपंथी वर्गों में विभाजित हो गया। ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन, बंबई एसोसिएशन तथा मद्रास एसोसिएशन ने औपनिवेशिक शासन के अन्यायों के बारे में ब्रिटिश संसद को याचिकाएं भेजीं।

Q4. निम्नलिखित गद्यांश का अंग्रेज़ी में अनुवाद कीजिए: (20)

प्रत्येक देश के इतिहास पर उसके भूगोल का प्रभाव पड़ता है। जहाँ तक भारत का प्रश्न है, उसकी सभ्यता युग-युगांतरों से स्वतंत्र रूप से विकसित होती रही है। उत्तरी पर्वतों की भयंकर रुकावटों और दक्षिण के समुद्रों के कारण भारत शेष विश्व से प्रायः पृथक् रहा। फलस्वरूप उस पर अधिक विदेशी प्रभाव नहीं पड़ सका। हिमालय पश्चिम से पूर्व तक लगभग 1600 मील लंबी और 50 मील चौड़ी एक दोहरी दीवार है। पूर्व में पत्कोई, नागा और लुशाई की पहाड़ियाँ और उनके घने जंगल आने-जाने में बाधा डालते हैं। पश्चिमी छोर पर कुछ दर्रे अवश्य हैं; जैसे खैबर और बोलन के, जहाँ से होकर विदेशी आते थे। दक्षिण की ओर शताब्दियों तक समुद्र भारत में आसानी से आने-जाने में रुकावट डालता रहा। किंतु बाद में नौ-विद्या-क्षेत्र में पर्याप्त प्रगति हुई। फिर तो यह समुद्र व्यापार के लिए सुगम मार्ग ही बन गया। 1498 ई. में वास्को-दी-गामा के नेतृत्व में पुर्तगाली लोग सबसे पहले समुद्री रास्तों से भारत आए। उसके बाद डच, फ्रांसीसी और अंग्रेज़ आए। ये सभी बहुत समय तक भारत में अपना प्रभुत्व जमाने के लिए आपस में संघर्ष करते रहे। इस प्रकार कुल मिलाकर भारत की भौगोलिक पृथकता के कारण यहाँ की सभ्यता पर अधिक विदेशी प्रभाव नहीं पड़ा।

Ans. The history of each country is influenced by its geography. As far as India is concerned, its civilization has been developing independently from era to era. Due to the severe blockages of the northern mountains and the seas of the south, India was almost isolated from the rest of the world. As a result, there could not be much foreign influence on her. The Himalayas are a double wall about 1600 miles long and 50 miles wide from west to east. In the east, the hills of Patkoi, Naga and Lushai and their dense forests obstruct the passages.

There are definitely some passes at the western end; like Khyber and Bolan, through which foreigners used to come. Towards the south, for centuries, the sea hindered the easy passage of India. But later there was substantial progress in the field of naval education. Then this sea became an easy route for trade. In 1498 AD, under the leadership of Vasco da Gama, the Portuguese first came to India by sea routes. Then the Dutch, the French and the English came. All of them struggled among themselves for a long time to establish their dominance in India. Thus, due to the geographical isolation of India, there was not much foreign influence on the civilization.

Q5. निम्नलिखित गद्यांश का हिंदी में अनुवाद कीजिए: (20)

At the stroke of the midnight hour, when the world sleeps, India will awake to life and freedom. A moment comes, when we step out from the old to the new. It is fitting that at this solemn moment, we take the pledge of dedication to the service of India. The service of India means the service of the millions who suffer. It means the ending of poverty and ignorance. It means the ending of disease and inequality of opportunity. The ambition of the greatest man of our generation has been to wipe every tear from every eye. That may be beyond us, but as long as there are tears and suffering, so long our work will not be over. This is no time for petty and destructive criticism, no time for ill-will or blaming others. We have to build the noble mansion of free India where all her children may dwell.

It is a fateful moment for us in India, for all Asia and for the world. A new star rises, the star of freedom in the East, a new hope comes into being. May the star never set and that hope never be betrayed!

Ans. मध्य रात्रि में जब पूरी दुनिया सो रही होगी, तब भारत स्वतंत्र जीवन के साथ नई शुरुआत करेगा। एक क्षण आता है, जब हम पुरातन से नवीनता की ओर कदम बढ़ाते हैं। यह उचित ही है कि इस पवित्र क्षण में हम भारत की सेवा के प्रति समर्पण का संकल्प लें। भारत की सेवा का मतलब है करोड़ों पीड़ितों की सेवा करना। इसका अर्थ है अज्ञानता और गरीबी को मिटाना, बीमारियों और अवसर की असमानता को खत्म करना। हमारी पीढ़ी के सबसे महान व्यक्ति की यही इच्छा रही है कि हर आंख से आंसू मिट जाएं। वह हमसे परे हो सकता है, लेकिन जब तक आंसू और पीड़ा है, तब तक हमारा काम खत्म नहीं होगा। यह क्षुद्र और विनाशकारी आलोचना का समय नहीं है, दुर्भावना या दूसरों को दोष देने का समय नहीं है। हमें ऐसे आजाद महान भारत का निर्माण करना है जहां उसके सारे बच्चे रह सकें।

यह हमारे लिए भारत में, पूरे एशिया के लिए और दुनिया के लिए एक भाग्यशाली क्षण है। एक नए तारे का जन्म हुआ है, पूरब में आजादी का तारा। एक नयी उम्मीद का जन्म हुआ है। काश! ये तारा कभी अस्त न हो और ये उम्मीद कभी धूमिल न हो।

Q6. (a) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए: (2×5 = 10)

(i) आँख खुलना 2

(ii) आकाश चूमना 2

(iii) पानी में आग लगाना 2

(iv) टेढ़ी खीर 2

(v) धोखे की टट्टी 2

(b) निम्नलिखित वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए: (2×5 = 10)

(i) पक्षी अंडे देता है। 2

(ii) ये लड़का गानेवाला है। 2

(iii) मरते क्या नहीं करते। 2

(iv) घोड़ा लँगड़ाते हुए भागा। 2

(v) जहाँ अभी जंगल है यहाँ कभी नदी थी। 2

(c) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए: (2×5 = 10)

(i) अक्षर 2

(ii) लहर 2

(iii) दर्पण 2

(iv) आभूषण 2

(v) बाल 2

(d) निम्नलिखित युग्मों को इस तरह से वाक्य में प्रयुक्त कीजिए कि उनका अर्थ एवं अंतर स्पष्ट हो जाए: (2×5 = 10)

(i) पास - पाश 2

(ii) दिन - दीन 2

(iii) प्रसाद - प्रासाद 2

(iv) पानी - पाणि 2

(v) शंकर - संकर 2

Ans. (a) मुहावरों का अर्थ एवं उनका वाक्य प्रयोग:

(i) आँख खुलना - वास्तविकता से अवगत होना
वाक्य प्रयोग: ठोकर खाने के बाद ही ज्यादातर लोगों की आँखें खुलती हैं।

(ii) आकाश चूमना - बड़ी उपलब्धि प्राप्त करना
वाक्य प्रयोग: सोहित बहुत ही मेधावी छात्र है। वह यू.पी.एस.सी. की परीक्षा में निश्चित ही आकाश चूमेगा।

(iii) पानी में आग लगाना - असंभव को संभव करना
वाक्य प्रयोग: रामू किसान ने बंजर भूमि में खेती करके अच्छी पैदावार प्राप्त की, यह कहा जा सकता है कि उसने पानी में आग लगा दी।

(iv) टेढ़ी खीर - कठिन कार्य
वाक्य प्रयोग: मोनू जैसे छात्र के लिए यू.पी.एस.सी. में प्रथम आना टेढ़ी खीर है।

(v) धोखे की टट्टी - भ्रम में डालने वाला
वाक्य प्रयोग: राजू जिस तरह नैतिक सिद्धांत का दिखावा करता है, वह धोखे की टट्टी ही प्रतीत होता है।

(b) **वाक्यों के शुद्ध रूप:**

(i) पक्षी अंडे देता है।
शुद्ध रूप: पक्षी अंडे देते हैं।

(ii) ये लड़का गानेवाला है।
शुद्ध रूप: यह लड़का गानेवाला है।

(iii) मरते क्या नहीं करते।
शुद्ध रूप: मरता क्या नहीं करता।

(iv) घोड़ा लँगड़ाते हुए भागा।
शुद्ध रूप: घोड़ा लड़खड़ाते हुए भागा।

(v) जहाँ अभी जंगल है यहाँ कभी नदी थी।
शुद्ध रूप: जहाँ अभी जंगल है, वहाँ कभी नदी बहती थी।

(c) **पर्यायवाची शब्द :**

(i) अक्षर - लिपि, अविनाशी, ईश्वर
(ii) लहर - तरंग, उमंग, आनंद
(iii) दर्पण - शीशा, आईना, आरसी
(iv) आभूषण - अलंकार, गहना, जेवर
(v) बाल - केश, रोम, रोआँ

(d) **शब्द युग्म का अर्थ एवं भेद :**

(i) पास - निकट
पाश - बंधन
वाक्य प्रयोग: भौंरे का पुष्प के **पास** आना उसके **पाश** का कारण बना।

(ii) दिन - दिवस
दीन - गरीब
वाक्य प्रयोग: वह बेचारा **दीन, दिन** भर सहायता के लिए भटकता रहा, परंतु किसी ने भी उसकी मदद नहीं की।

(iii) प्रसाद - कृपा
प्रासाद - महल
वाक्य प्रयोग: किसी **प्रासाद** का वासी बनना ईश्वर के **प्रसाद** से ही संभव है।

(iv) पानी - जल
पाणि - हाथ
वाक्य प्रयोग: दाएं **पाणि** से **पानी** देना अच्छा माना जाता है।

(v) शंकर - शिव
संकर - मिश्रित नस्ल
वाक्य प्रयोग: भगवान **शंकर** की पूजा में **संकर** नस्ल की गाय का दूध चढ़ाना अच्छा नहीं माना जाता है।

यू.पी.एस.सी. सी.एस. 2022 (मुख्य परीक्षा) हिन्दी अनिवार्य हल प्रश्न पत्र

(Held On Sep. 2022)

Time allowed : Three hours *Maximum Marks : 300*

प्रश्न-पत्र के लिए विशिष्ट अनुदेश:

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

- सभी प्रश्नों के उत्तर लिखना अनिवार्य है।
- प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने अंकित हैं।
- उत्तर हिन्दी में ही लिखे जाएँगे, यदि किसी प्रश्न-विशेष में अन्यथा निर्दिष्ट न हो।
- जिन प्रश्नों के संबंध में अधिकतम शब्द-संख्या निर्धारित है, वहाँ इसका अनुपालन किया जाना चाहिए। यदि किसी प्रश्न का उत्तर, निर्धारित शब्द-संख्या की तुलना में काफी लंबा या छोटा है तो अंकों की कटौती की जा सकती है।
- प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका का कोई भी पृष्ठ अथवा पृष्ठ का भाग, जो खाली छोड़ा गया हो, उसे स्पष्ट रूप से काट दिया जाना चाहिए।

Q1. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 600 शब्दों में निबंध लिखिए: (100)

(a) नवीकरणीय ऊर्जा: संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ
(b) संचार क्रान्ति का महत्त्व
(c) खेलों का बढ़ता व्यवसायीकरण
(d) खान-पान का स्वास्थ्य पर प्रभाव

Ans.

(a) **नवीकरणीय ऊर्जा: संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ**

नवीकरणीय ऊर्जा या अक्षय ऊर्जा में वे सारी ऊर्जा शामिल हैं जो प्रदूषणकारक नहीं हैं तथा जिनके स्रोत का क्षय नहीं होता, या जिनके स्रोत का पुनः भरण होता रहता है। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जलविद्युत ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा, बायोमास, जैव ईंधन आदि नवीकरणीय ऊर्जा के कुछ उदाहरण हैं।

भारत वर्तमान समय में नवीनीकरण ऊर्जा पर अपनी निर्भरता को अधिक-से-अधिक बढ़ाने की कोशिश कर रहा है। विभिन्न क्षेत्रों में भारत नवीनीकरण ऊर्जा को प्राप्त करने के लिए ज्यादा-से-ज्यादा सफल प्रयोग कर रहा है। भारत में नवीनीकरण ऊर्जा की अपार संभावनाएं हैं। नवीनीकरण ऊर्जा संसाधन, ऊर्जा के परंपरागत स्रोतों (जो कि दुनिया के काफी सीमित क्षेत्रों में मौजूद है) की अपेक्षा काफी विस्तृत भू-भाग में फैले हुए हैं और यह सभी देशों को काफी आसानी से उपलब्ध हो सकते हैं। यह न केवल पर्यावरण के अनुकूल है, बल्कि इनके साथ कई प्रकार के आर्थिक लाभ भी जुड़े हुए हैं।

स्वच्छ पृथ्वी के प्रति जिम्मेदारी को ध्यान में रखते हुए भारत ने संकल्प लिया है कि वर्ष 2030 तक बिजली उत्पादन की हमारी 40 फीसदी स्थापित क्षमता नवीकरणीय ऊर्जा के